सिंगापुर
ङ्गरवरी १५, २००१

सन्देश संख्या ४६

विचार क्या है? चिन्तन क्यों?

विचार जैविक और कालानक्रमिक गति है, जो दैनिक जीवन की चुनौतियों और उद्दीपनों पर स्मृतिजनित अनुक्रिया की एक नैसर्गिक और यांत्रिक प्रक्रिया है। किन्तु, चिन्तन (मानसिक गतिविधि) खोज और महत्वाकांक्षा, चाह और चिन्ता, मिथ्याभिमान और दुता, अटकलबाजी और संशय, निरोध एवं निवेश, अभिधारणा एवं विरोधाभास, 'कुछ बनने' एवम् अंधविश्वासी होने, तुलना एवं प्रतिद्वन्द्विता, सांस्कृतिक एवम् अनुबन्धित प्रतिक्रियाओं, चालाकी एवं मतलबीपन, आक्रामक एवं संग्राही प्रक्रिया आदि की मानसिक गति है।

शरीर में रक्त का सामान्य प्रवाह स्वास्थ्य है किन्तु दबाव के अन्तर्गत रक्त का परिसंचरण रोग है। उसी तरह, समय–समय पर आवश्यकतानुसार सूक्ष्म देह (अर्थात् मन) के अन्दर की विभिन्न चुनौतियों का सम्यक् सामना करने के लिए विचारों का असतत प्रवाह स्वास्थ्य है, किन्तु दूसरों पर निर्भरता, आसक्ति और लालसा के परिणामस्वरूप विवश एवं सम्मोहित मानसिक गतिविधि एक है जिसे संविभ्रम (पैरानोइया) कहते हैं।

जब आप कार चला रहे होते हैं, विचार जैविक एवं कालानुक्रमिक गति के रूप में कार्य कर रहा होता है, किन्तु अन्दर अर्थात् मानसिक स्तर पर यह आवश्यक नहीं कि कोई गति हो रही हो जब तक कि आप किसी बाध्यता या विवशता या लालसा से ग्रस्त न हों।

जब शिवेन्दु व्याख्यान दे रहे हैं, विचार क्रियाशील हैं क्योंकि भाषा का प्रयोग हो रहा है। परन्तु इसके लिए मानसिक गतिविधि आवश्यक नहीं है क्योंकि वे धार्मिक उपदेश के बहाने कोई समूह, पन्थ या सम्प्रदाय गठित करने के उद्देश्य से कोई प्रचार नहीं कर रहे हैं। वास्तव में मानसिक गतिविधि जागरूकता और प्रत्यक्षबोध का तीव्र प्रवाह नहीं है और इसलिए यह पूर्व अवधारणाओं एवं पूर्वाग्रहों, धर्मान्धताओं एवं विकृतियों से बोझिल मन की मतिमन्दता का परिचायक है।

क्रियायोग स्वाध्याय है जिसमें चित्तवृत्ति की पल–पल की गतिविधियों, इसके मनोवेग एवं मनोभाव, उलझन एवं विकृति, अभिलाषा एवम् उत्सुकता आदि प्रकट होते रहते हैं।

आत्मज्ञान के बिना अनुभव भ्रान्ति उत्पन्न करता है। आत्मज्ञान से युक्त अनुभव 'मैंपन' की मनस्तात्विक स्मृति के रूप में कोई अवशेष नहीं छोड़ता है। तब विभेदकारी चित्तवृत्ति के अवशेषों से विचारों की उत्पत्ति नहीं हो पाती है।

क्रियायोग मानसिक गतिविधियों से मुक्ति प्रदान करता है और इसलिए यह परम प्रबोध है। तब आध्यात्मिक सन्दर्भों में ''मेरा अनुभव'' जैसे उद्गार मात्र अज्ञान और भ्रमग्रस्तता दर्शाते हैं।

।। लाहिड़ी श्रुति अमर रहे ।।